24 मार्च, 2023 को व्यतिक्रम मासडो द्वारा आयोजित "पूर्वोत्तर लोक उत्सव" के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी का संबोधन ---------- ----------

मंच पर विराजमान
शिक्षा मंत्री माननीय डाॅ. रनोज पेगु जी,
गुवाहाटी में बांग्लादेश के असिस्टेंट हाई कमिश्नर मिस्टर रूहूल अमिन जी,
NEDFi के चेयरमैन श्री PVSLN मूर्ति जी,
नेरिम ग्रुप की डायरेक्टर प्रोफेसर श्रीमती संगीता त्रिपाठी जी,
साहित्यकार श्री शंख शुभ्र देब बर्मन जी,
एवं उपस्थित देवियो और सज्जनो !

"व्यतिक्रम संस्था" द्वारा आयोजित इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुझे शामिल करने के लिए आप सभी का मैं हृदय से धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूँ कि यह कार्यक्रम प्रदेश के लोगों में एकता और भाईचारे के बंधन को और अधिक मजबूती प्रदान करेगा।

मित्रों,
असम सहित पूरे पूर्वोत्तर के लोगों से मेरा आत्मिक लगाव रहा है। माँ कामाख्या जी के आशीर्वाद से मुझे पूर्वोत्तर में कई बार आने का मौका भी मिला। यहाँ की जलवायु, जनजीवन, लोकाचार, लोकोत्सव, परिधान, खानपान - हर चीज अतुलनीय है।
असम के राज्यपाल का पदभार मिलने के बाद मुझे पूर्वोत्तर के बारे में, विशेष रूप से असम के बारे में, और अधिक गहराई से जानने और समझने का सौभाग्य मिला है। इसके लिए मैं सभी असमवासियों का आभारी हूँ।

मित्रो,
प्राकृतिक संसाधनों, जैव-विविधताओं, दुर्लभ वन्य-जीवों एवं वनस्पतियों के साथ ही अपनी समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत के लिए "पूर्वोत्तर भारत" हमेशा अग्रणी रहा है। संभवतः इसीलिए हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पूर्वोत्तर को "अष्ट लक्ष्मी" कहा है और अपने संबोधन में वे पूर्वोत्तर का बार-बार जिक्र करते रहे हैं। यह उनके पूर्वोत्तर के प्रति असीम प्रेम को दर्शाता है। पूर्वोत्तर वास्तव में देश का एक समृद्ध क्षेत्र है।

मित्रों,
आज के इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में हमारे पूर्वोत्तर राज्यों की गौरवशाली परंपराओं सहित विभिन्न प्रकार के गीत-नृत्य की सुंदर प्रस्तुतियां देखने को मिलेंगी। दरअसल, इस प्रकार के आयोजन से भारत की "विविधता में एकता" की जो पहचान है - उसे और बल मिलता है।

"पूर्वोत्तर लोक उत्सव" का मुख्य उद्देश्य है - पूर्वोत्तर के लोक-जीवन, लोक-कला और लोक-संस्कृति से शेष देशवासियों को परिचित कराना, साथ ही राष्ट्रीय एकता के सूत्र को और अधिक सशक्त करना। मुझे भरोसा है कि इस दिशा में यह "कार्यक्रम" सकारात्मक भूमिका निभाने में सक्षम होगा।

वस्तुतः पूर्वोत्तर के लोग तो प्राचीन काल से ही उत्सवप्रिय रहे हैं। वे अपनी पारंपरिक रीति-नीति के साथ, पूरे वर्ष के दौरान अनगिनत उत्सवों एवं त्योहारों को मनाते हैं। ये सभी पूर्वोत्तर की जीवंत एवं इंद्रधनुषी संस्कृति का बोध कराते हैं।

मित्रों,
हम यह जानते हैं कि "पूर्वोत्तर भारत" जनजाति-बहुल क्षेत्र है। यहां विभिन्न जनजाति के लोग रहते हैं। प्रत्येक जन-समुदाय की अलग जीवन-शैली है। परन्तु सांस्कृतिक रूप से सभी एक सूत्र में बंधे हुए हैं। पूर्वोत्तर की जीवन-शैली देश-दुनिया में एक अलग पहचान रखती है। पूर्वोत्तर की लोक-कला, लोक-नृत्य, पोशाक, रहन-सहन एवं खानपान भी थोड़ा अलग हैं। हर फेस्टिवल के दौरान जनजातीय लोगों की अपनी पारंपरिक जीवन-शैली की रंगीन तस्वीरें दिखाई देती हैं। मेरा विश्वास है कि इस "सांस्कृतिक कार्यक्रम" के माध्यम से दर्शकों को भरपूर आनंद और ऊर्जा मिलेगी।

मुझे खुशी है कि व्यतिक्रम संस्था ने समय समय पर जन जागरूकता अभियान भी चलाया है। पिछले साल "व्यतिक्रम मासडो" द्वारा

60 दिवसीय एंटी ड्रग्स, टोबैको एंड अल्कोहल अवेयरनेस कैंपेन चलाया गया था। जो अत्यंत प्रशंसनीय था।

आज मुझे औपचारिक रूप से इस "नाॅर्थ ईस्ट फोक फेस्टिवल" का उद्घाटन करके अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हुई है। मैं "व्यतिक्रम संस्था" के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं सहित कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी कलाकारों को बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

आप सभी को एक बार पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद।
जय हिन्द !